ग्लिसरीन के साथ मिश्रित करें। यह घोल अपना असर 2–3 घंटे तक रखता है इस दौरान थन का मुंह बंद हो जाता है।

- थानों की सूजन एंटीसेप्टिक घोल के उपयोग और दूध छोड़ने के समय इलाज करने से बीमारी से काफी हद तक छुटकारा मिल सकता है।

थानों में एंटीबायोटिक ट्यूब चढाने का तरीका

- थन में ट्यूब चढ़ाने से पहले दूध अच्छी तरह से निकाल ले और ज़रूरत पढ़ने पर दूध निकालने का टीका इस्तेमाल करें।
- थन को अच्छी तरह से साफ करें और इन के मुँह पर स्प्रिट की रूई 1–2 मिनट तक अच्छी तरह रखें।
- एंटीबायोटिक ट्यूब के ऊपर प्लास्टिक की नली उतार दें और उसे हाथ से बिल्कुल ना छुएं, इसको बड़ी सावधानी के साथ आहिस्ता आहिस्ता घुमाते हुए थन में चढ़ाएं।
- एंटीबायोटिक के ट्यूब को दबाकर सारी दवाई थन में चढ़ाएं।
- पशुओं का दूध 60–72 घंटे तक इस्तेमाल नहीं करना है।

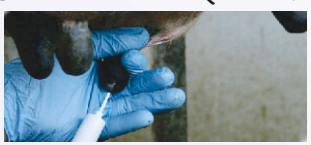

रोकथाम

जानवरों में थनैला रोग की रोकथाम के लिए उनके दूध का तीन माह के अंतराल पर नियमित परीक्षण आवश्यक है ये परीक्षण कई प्रकार के टेस्ट के द्वारा किया जाता है जैसे CMT, SLST और BTB। यह परीक्षण हर पशुफार्म में किया जाना चाहिए।

दूध की जांच

ध्यान दें : विश्वविद्यालय दूध परीक्षण की किट कम मुल्य पर प्रदान करता है।

ध्यान दें : रोकथाम बहुत महत्वपूर्ण है रोकथाम में सौ रूपए का खर्च करने पर 500 रूपए का फायदा होता है।

संकलनकर्ता :

डॉ० राजीव सिंह एवं डॉ० राजेश अग्रवाल

थनैला रोग

पशु औषधि विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय

शेर-ए-कश्मीर कृषि एवं प्रौधौगिकी विश्वविद्यालय

रणवीर सिंह पुरा, जम्मू - 181102

क. गाय भैंसों के थानों में सूजन

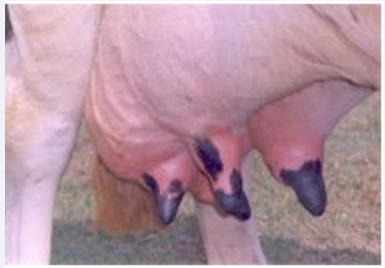

थनैला रोग गाय भैसों में होने वाला एक मुख्य रोग है जिसके कारण किसानों को बहुत अधिक आर्थिक नुकसान होता है। इस रोग से 10–50 प्रतिशम गाय और 5–20 प्रतिशत भैंस प्रभावित होती हैं।

पशुओं में थनैला रोग मुख्य दो प्रकर के स्वरूप में मिलता है –

1. दिखाई देने वाली (क्लीनिकल फॉर्म)
2. दिखाई नहीं देने वाली (सवक्लीनिकल फॉर्म)

1. दिखाई देने वाली (क्लीनिकल फॉर्म)

- इसमें पशुओं के थन में सूजन और दर्द होता है।
- दूध का रंग बदल जाता है और दूध में लच्छे मिलते हैं।
- 1–10 प्रतिशत जानवर इससे प्रभावित होते हैं।

2. दिखाई नहीं देने वाली (सवक्लीनिकल फॉर्म)

- इस प्रकार के थनैला रोग में जानवर किसी भी प्रकार के लक्षण नहीं दिखाता है।
- बीमारी का यह स्वरूप ज़्यादा खतरनाक है।
- इससे 20–80 प्रतिशत जानवर प्रभावित होते हैं।
- जानवर का दूध उत्पादन 10–25 प्रतिशत कम हो जाता है।

ख. इलाज

- जितना जल्दी उतना फायदा, जितनी देर उतना नुकसान।
- डॉक्टर की सलाह के साथ थानों में एंटीबायोटिक टयूब सही तरीके से चढ़ाएं, ज़रूरत पड़ने पर दूध के नमूने का परीक्षण कराएं और डॉक्टर के द्वारा बतायी गई दवाइयों का उपयोग करें।
- दवाइयां 3–5 दिन तक लगाएं और बीच में ना छोड़ें।
- सही समय और सही तरीके से दवाइयां इस्तेमाल करने के बाद नई बीमारी 70प्रतिशत तक ठीक हो जाती है और पुरानी बीमारी कम ठीक होती है। इसलिए बचाव के तरीकों को उपयोग में लाएं।

ग. बचाव

- थन की सफाई रखो।
- बीमार पशुओं का इलाज जल्द से जल्द कराएं।
- दूध निकालने के बाद थानों को एंटीसेप्टिक के घोल में डूबोएं।
- गाय का दूध सुखाते समय खास किस्म की दवाई के टयूब थनों में चढ़ाएं।
- जिन पशुओं के थानों में सूजन है उन्हें अन्य (दूसरे) स्वास्थ्य पशुओं से अलग रखें और उनका दूध स्वस्थ पशुओं के दूध को निकालने के बाद निकालें।
- एक पशु से दूसरे पशु की चुवाई के समय अपने हाथों को कीटाणुनाशक दवाई से ज़रूर धोएं।
- दूध निकालने का काम पूरी हथेली विधि से करें।

दूध निकालने का सही तरीका

थानों को दवाई के घोल में डुबोना

- थन के ऊपर और इर्द गिर्द बीमारी के कीटाणु रहते हैं।
- दूध निकालने के बाद 2–3 घंटे तक थानों का मुंह खुला रहता है इस समय बीमारी के कीटाणुओं के थन के अंदर जाने का डर रहता है।
- इससे बचने के लिए दूध निकालने के बाद थानों को खास किस्म के कीटाणुनाशक घोल में डुबो दूना चाहिए इसके लिए Betadine और Chlovhexidine के घोल का इस्तेमाल करना चाहिए। Betadine और Chlovhexidine को 75:25 के अनुपात में